Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 5.647, Volume 10, No. 03, July, 2020, pp. 347-350

'बड़े घर की बेटी' में लोकोक्ति और मुहावरे

डॉ. मीनू लता सिंह*

प्रस्तावना

साहित्यकार अपने वर्तमान के प्रति जितना अधिक सजग, सचेत और संवेदनशील रहता है, वह उतना ही व्यापक, जीवन्त तथा संवेदनशील साहित्य की रचना करने में समर्थ हो पाता है। प्रेमचन्द्र में इन्हीं व्यापक दृष्टिकोण, जीवन्त प्रस्तुति और संवेदनशील भावुकता का प्रचुर प्रयोग मिलता है, क्योंकि इनमें इनके सम्पूर्ण अनुभव और चिन्तन की अभिव्यक्ति है।

प्रेमचन्द्र के कथा–साहित्य की यों तो कई विशिष्टताएँ हैं, पर बीच–बीच में लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग इसकी विभेदक पहचान है। यथास्थान मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग न केवल किसी खास विचार या स्थिति की जटिलता का संबंध बनाने में सहायक होता है, अपितु भाषा को भी प्रभविष्णु बनाता है। भाषा की इस प्रभविष्णुता को एक पाश्चात्य विचारक ने 'जायकेदार' नाम दिया जाता है। उन्हीं के शब्दों में, "As food without salt becomes tasteless, so is diction without idioms and phrases".

डॉ0 रामविलास शर्मा ने एक स्थल पर सही टिप्पणी की है कि ''प्रेमचन्द्र की औपन्यासिक कला का रहस्य देहातीपन है। और कहना न होगा कि लोकोक्तियों और मुहावरों को देहातीपन का सशक्त स्त्रोत माना जाता है। 'बड़े घर की बेटी' में प्रयुक्त लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे इसका अपवाद नहीं। तो आइए, देखते है, आलोच्य कहानी में प्रयुक्त लोकोक्तियों और मुहावरों को।

प्रेमचन्द्र के शब्दचित्रों की सजीवता में उनके द्वारा प्रयुक्त सुन्दर–सुन्दर मुहावरों तथा अनुभूतिमूलक अमर उक्तियों के बाहुल्य ने चार–चाँद लगाये हैं।इनमें प्रयुक्त लोकोक्तियों और मुहावरों में प्राचीन परंपरा और संस्कृति का पुट है तो जीवन की सच्चाइंयों की पुष्टि करनेवाले सुभाषित भी। साथ ही, इनके द्वारा प्रयुक्त मुहावरे और लोकोक्तियाँ वैसे ही होते हैं, जैसे इनके पात्र और कथानक। अपनी

* पीएच.डी., हिन्दी विभाग, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, बिहार।

कथा का विस्तार करने के क्रम में इनका स्वाभाविक और सटीक चयन प्रेमचन्द्र की विशिष्टता है। कहीं भी अस्वाभाविक और ठूंसा हुआ प्रयोग नहीं दिखता। विवेच्य कहानी का आधार ऐसा विषय है, जो तात्कालिक तो है ही, साथ ही समीचीन भी। इसमें दो लोकोक्तियाँ हैं–

- अपनी खिचड़ी अलग पकाना और
- हाथी मरा भी तो नौ लाख का।

मुहावरे कुछ इस प्रकार हैं– आँखें खुलना, हाथ समेटना, घी की नदी बहना, बात बढ़ना, खून का घूँट पीना, पिंड छुड़ाना, भरी बैठाना, आग लगाना, आड़े हाथों लेना, सिर चढ़ना या चढ़ाना, मजा चखाना, पानी होना, दिल खोलना, आदि। इन मुहावरों का प्रयोग कथा को रोचक बनाता है। कहा यह भी जा सकता है कि इनकी मदद से कहानीकार विवेच्य कहानी की स्थितियों एवं परिस्थितियों को सुस्पष्ट करने में सफल हुए हैं। उदाहरणार्थ– कथा के आरंभ में ही प्रेमचन्द्र ने अपनी पात्रा आनंदी के विचार इसतरह व्यक्त किए है 'यदि बहुत कुछ सहने और तरह देने पर भी परिवार के साथ निर्वाह न हो सके, तो आए दिन की कलह से जीवन को नष्ट करने की अपेक्षा यही उत्तम है कि अपनी खिचड़ी अलग पकायी जाय।'

इसकी उद्धरण में हिन्दी की प्रसिद्ध लोकोक्ति 'अपनी खिचड़ी अलग पकाना' का प्रयोग हुआ है। इसका अर्थ है– अलग और अकेले रहना। यहाँ पात्र के विचार को स्पष्टतया दर्शाने के लिए लोकोक्ति का सटीक प्रयोग कर भाव को सम्प्रेषणीय बनाने में कथाकार सफल हुए हैं। हमारे समाज के कई लोग ऐसे हैं, जो परिवार को एकजुट रखने में विश्वास करते हैं और इसके लिए वे कई तरह की कठिनाईयों का भी सामना करने के लिए तैयार रहते हैं। किन्तु प्रेमचन्द्र की यह पात्रा 'आनंदी' दो टूक शब्दों में कहती है कि विविध कष्टों और कठिनाईयों का सामना करने पर भी यदि खुशी न मिले तो वह परिवार को तोड़ना उत्तम समझती हैं। उसके इस भाव को बल प्रदार करने में उपर्युक्त लोकोक्ति समर्थ है।

यहाँ अपने दो प्रमुख पात्रों के एक–दूसरे से विपरीत विचारों को लोकोक्ति की मदद से सशक्त रूप में प्रस्तुत किया है। कहना न होगा कि इससे कहानी की रोचकता में वृद्धि हुई हैं।

चूँकि, आनंदी बड़े जमींदार–परिवार में पली बढ़ी है, इसलिए उसका व्यंग्य करते हुए यह कहना कि 'हाथी मरा भी तो नौ लाख का' प्रसंगानुकूल तो है ही, साथ ही, सहज प्रभावशाली भी। इस लोकोक्ति का शाब्दिक अर्थ हुआ कि हाथी इतना विशाल और ष्है। कहने का तात्पर्य है कि सुखी–समृद्ध परिवार कितना ही कमजोर या गरीब हो जाय, उसकी समृद्धि झलक ही जाती है। आनंदी बड़े जमींदार परिवार की लड़की है। उसके घर में किसी चीज की कमी न थी, जबकि ससुराल में पाव भर घी के

लिए उसके देवर से उसकी अनबन हो जाती है। इसी पर खीझकर वह उपर्युक्त लोकोक्ति का इसी अर्थ में प्रयोग करती है कि उसका परिवार कितना भी कमजोर हो जाय पर इस समय भी उसके यहाँ नाई–कहार पर इतना खर्च हो जाता है जितने के लिए वह यहाँ सोचती है। प्रस्तुत प्रसंग में विवेच्य लाकोक्ति का प्रयोग सटीक एवं स्वाभाविक है, जो कथाकार के भाव को पाठक तक सहज सम्प्रेषणीय बनाता है।

कथा के दूसरे प्रसंग में आनंदी के पिता से परिचय कराते हुए कहते हैं– 'बड़े उदारचित्त और प्रतिभाशाली पुरूष थे,.....सात लड़कियाँ हुई और.....पहली उमंग मे ंतो उन्होनें तीन के ब्याह दिल खोलकर किये, पर पंन्द्रह–बीस हजार रूपयों का कर्ज सिर पर हो गया तो आँखें खुली, हाथ समेट लिया, आनंदी चौथी लड़की थी।'

उपर्युक्त प्रसंग में मुहावरों का सुगुंफित प्रयोग प्रष्टव्य है, जहाँ कथन की विशिष्टता में मुहावरे सहायक है, साथ ही, कथाकार के विचार भी स्पष्ट लक्षित है कि पहले तीन लड़कियों में उन्होनें अपनी इच्छा से खर्च किया पर कर्ज हो जाने पर उन्हें यह एहसास भी हो गया कि आगे ऐसा करना मुश्किल है। समयानुसार उन्होंने अपने आपको बदल लिया, अर्थात् फूँक–फूँक कर चलने की सोचने लगे। इतना ही नहीं, खर्च भी कम करने लगे और इन सभी विचारों को दिल खोलना, सिर पर होना, आँखें खुलना, हाथ समेटना, आदि मुहावरों द्वारा स्पष्टतः बल मिला है। उपर्युक्त मुहावरों के प्रयोग से प्रेमचंद का भाषा पर एकाधिकार और मुहावरों के प्रयोग की विलक्षणता भी झलकती है।

पुनः, इस कहानी के आधार–प्रसंग में लाल बिहारी द्वारा आनंदी को लक्ष्य कर व्यक्त यह मुहावरा कि 'मैके में तो चाहे घी की नदी बहती हो।' कथा–प्रवाह के साथ–साथ विचार एवं भाव की एकरसता कायम रखने में सहायक है। प्रसंगानुकूल घी की चर्चा में 'घी की नदी बहना' मुहावरा उपयुक्त तो है ही, साथ ही, काफी रोचक और स्वाभाविक भी।

कहना न होगा कि प्रेमचंद एक पर एक मुहावरे का प्रसंगगत प्रयोग करने में निपुण हैं। दूसरे शब्दों में, मुहावरों का महल खड़ा करने में इन्हें महारत हासिल है। एक ही प्रसंग के अन्तर्गत कई मुहावरों का सहज और चुटीला प्रयोग करना इनकी विलक्षणता है। ऐसे प्रयोग इनकी कथा को लाक्षणिकता एवं व्यंजकतापूर्ण प्रदान करते हैं। जैसे– उपर्युक्त प्रसंग में ही लालबिहारी की बात पर आनंदी का व्यंग्य करना, इस पर लालबिहारी का जल जाना। आनंदी द्वारा मजा चखाने की धमकी देना। इसी बात के बढ़ जाने पर आनंदी का खून का घूँट पीकर रह जाना। ये सभी मुहावरे कथा के उद्धेश्य की सिद्धि में सहायक सिद्ध हुए हैं।

कहानी के अगले प्रसंगों में भरी बैठना, आग लगाना, आड़े हाथों लेना, दम न मारना, सिर चढ़ना या चढ़ाना, इत्यादि मुहावरों का सुन्दर प्रयोग हुआ है। पुनः लालबिहारी का घर छोड़कर जाने के लिए तैयार होने पर भी श्रीकंठ का अपनी बात पर अड़े रहना और इस कारण आनंदी का 'पानी–पानी होना'– इन सभी मुहावरों से कहानी रोचक बन पड़ी है।

निष्कर्षतः, छोटी–सी घटना पर आधारित एवं सुसंगठित व सुगुंफित भाषा–प्रयोग द्वारा संबलित 'बड़े घर की बेटी' प्रसिद्ध और लोकप्रिय कहानी बन गई है, क्योंकि प्रभावशाली शैली द्वारा कथाकार अपने उद्धेश्य को सफल बनाने में सक्षम हो पाता है। शैली ही उसकी लेखनी की इमारत की नींव होती है। प्रेमचन्द ऐसे ही शिल्पी कथाकार हैं, जो लोकोक्ति और मुहावरों की मदद से अपनी कथा की इमारत को मजबूत और सुन्दर बनाते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- बड़े घर की बेटी, भाग–1य मुहावरे एवं लाकोक्ति।
- बड़े घर की बेटी, भाग–2य मुहावरे एवं लाकोक्ति।
- बड़े घर की बेटी, विकिपीडिया।

♦❐♦